संपादकीय

शैक्षिक विमर्श का वर्तमान परिदृश्य

शिक्षा में विभिन्न स्तरों पर कार्यरत अनेक लोगों से अन्तःक्रिया के अनुभव शिक्षा की मौजूदा स्थिति की एक झलक देते हैं और यह स्थिति कोई अच्छे संकेत देने वाली नहीं है। अधिकांश लोग शिक्षा में हो रहे बेहतरी के तमाम प्रयासों से निराश दिखाई देते हैं। हालांकि अनेकानेक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं, कॉपोरेट फाउन्डेशन एवं छोटे-बड़े स्वयंसेवी संगठन बढ़-चढ़कर शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं और इस लिहाज से मौजूदा समय अभी तक के इतिहास में श्रम और संसाधनों की दृष्टि से अभूतपूर्व है। संभवतः भारत में इतने बड़े पैमाने पर शायद ही इससे पहले कभी इतना निवेश और शैक्षिक पहलकदमी हुई हो। इन तमाम प्रयासों के बावजूद हमारी शैक्षिक व्यवस्था बेहतरी से अछूती नजर आती है और मौजूदा शैक्षिक स्थितियों के प्रति चारों तरफ एक गहरी निराशा पसरी हुई दिखाई देती है। कुछ जानकारों का मानना है कि तमाम कोशिशों के बावजूद बजाय बेहतरी के शिक्षण के मामले में हालात और बदतर ही हुए हैं।

इसकी एक महत्त्वपूर्ण वजह शिक्षा को अ-राजनैतिक समझना है तो दूसरी वजह हमारे यहां गंभीर शैक्षिक विचार-विमर्श की परंपरा का नहीं होना है। बहुत बड़ी शैक्षिक व्यवस्था होने के बाद भी भारत में किसी भी भाषा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के जरनल्स नहीं हैं। भारतीय भाषाओं में भी मौलिक शैक्षिक चिन्तन और लेखन का गहरा अभाव है। शिक्षा में नीतिगत स्तर पर हो रहे हस्तक्षेपों और जमीनी स्तर पर नवाचारों के नाम से चल रहे विविध कार्यक्रमों पर आलोचनात्मक चिन्तन और लेखन की कमी खटकती है। इसका परिणाम यह होता है कि किसी भी संसाधन संपन्न व्यक्ति के मन में शिक्षा को लेकर जो भी विचार आता है वह स्कूल स्तर पर हस्तक्षेप करने के लिए निकल पड़ता है। बिना जांचे-परखे इन हस्तक्षेपों का क्या अनुभव रहा है इस पर किसी तरह का आलोचनात्मक लेखन या साहित्य उपलब्ध नहीं होता और न ही सफलता-असफलता का कोई लेखा-जोखा होता है ताकि इनसे भविष्य के लिए किसी तरह के दिशा-निर्देश या सीख ली जा सके।

हमारे देश में साहित्य में अनेकानेक पत्रिकाएं हैं और लोग उनमें लिख भी रहे हैं लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में एक और गंभीर समस्या है, जो इसे और ज्यादा नाजुक बनाती है, वह यह कि हमारे देश में शिक्षा जैसे वृहत् क्षेत्र में गंभीर पत्र-पत्रिकाओं का अभाव तो है ही लेकिन जो पत्र-पत्रिकाएं अपने प्रयासों से निकल रहीं हैं, उनमें शिक्षा के क्षेत्र अध्ययन-अध्यापन, चिन्तन या धरातल पर गंभीरता से कार्यक्रमों का संचालन करने वाले लोग लिख नहीं रहे हैं। इसकी वजह से शैक्षिक विमर्श की कोई स्थिति नहीं बन पा रही और साथ ही धरातल पर काम करने वाले शिक्षाकर्मियों तक किसी तरह का गंभीर साहित्य नहीं पहुंच पा रहा है। ऐसी स्थितियों में किसी गंभीर शैक्षिक विमर्श या शैक्षिक व्यवहार की कल्पना कर पाना लगभग नामुमकिन हो रहा है। हिन्दी में आने वाला शैक्षिक साहित्य अधिकांशतः अंग्रेजी से हिन्दी में अनुदित होकर आ रहा है यानी अनुभव से ज्ञान सृजित कर पाने और उससे सिद्धान्त बना पाने का कारोबार उधारी पर ही चल रहा है। ऐसी स्थिति में यह सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारे देश में शैक्षिक चिन्तन और व्यवहार की दिशा क्या होने वाली है।

इस स्थिति के चलते यदि शिक्षा की आधारभूत दक्षताओं - साक्षरता एवं गणन की दक्षताओं - का जायजा लिया जाए तो हमारे स्कूलों में आरंभिक स्तर पर बच्चों में पढ़ने-लिखने या अंक ज्ञान की काबिलियत किस स्तर तक विकसित हो पा रही है तो इससे स्थिति एकदम स्पष्ट हो जाती है। अनुभव और अध्ययन बताते हैं कि कक्षा पांच तक पहुंचते-पहुंचते बच्चे धाराप्रवाह पढ़ नहीं पाते और पढ़े हुए टैक्स्ट का अर्थ नहीं समझ पाते। यदि शिक्षकों के माथे पर आरोप मढ़ने के सहज लालच से परे जाएं तो इसकी एक वजह इन आधारभूत दक्षताओं को हासिल कर पाने का विमर्श अभी तक जमीनी स्तर पर नहीं पहुंच पाना है और इसके बारे में शिक्षाकर्मियों में किसी स्पष्ट समझ का अभाव होना भी है। यदि शिक्षा के इस परिदृश्य को बदलना है तो इसके लिए शैक्षिक विमर्श की परंपरा को स्थापित करना होगा। यह परंपरा किसी एक मत के प्रचार-प्रसार से नहीं बल्कि खुले रूप से शैक्षिक समस्याओं पर स्वस्थ संवाद से स्थापित होगी। अतः शैक्षिक विमर्श को स्थापित करने की दिशा में भी प्रबुद्ध जनों को सोचना होगा। ◆

विकल्प